राज
कॉमिक्स
संख्या 0096
स्वर्ग की
तबाही
RAJ COMICS
राज
कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA
सुपरकमांडो
ध्रुव
इस
कॉमिक्स के
साथ एक स्टीकर
Vijay Kadam

स्वर्ग की तबाही

सुपर कमांडो-ध्रुव

कथानक व चित्रांकन: अनुपम सिन्हा

सम्पादक: मनीष चंद्र गुप्त

पिछले भाग में आपने पढ़ा कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एक जर्मन वैज्ञानिक ने लक्षद्वीप के जंगलों में स्थित एक गुप्त प्रयोगशाला में मनुष्य को 'पशु-मानव' में बदलने का एक अनोखा आविष्कार किया। परिस्थिति-वश उसने आत्महत्या कर ली। कई वर्षों बाद कुछ अपराधियों ने उस आविष्कार के जरिए पूरी दुनिया पर राज्य करने का षड्यंत्र रचा। परंतु तभी ऐसे ही एक प्राणी 'भेड़िया-मानव' की मुठभेड़ ध्रुव से हो गई। ध्रुव उस 'भेड़िया-मानव' द्वारा छोड़े गए सूत्रों का पीछा करता-करता, लक्षद्वीप में स्थित 'नागू' द्वीप के घने जंगलों में आ पहुंचा, जहां इन प्राणियों का मुख्य गढ़ था। वहां ध्रुव की मुठभेड़ 'सर्प-मानव', 'गैंडा-मानव' और 'भेड़िया-मानव' से हुई। परंतु ध्रुव अपनी बुद्धि और शक्ति से सबको परास्त करता हुआ उनके गढ़ में जा घुसा। परंतु वहां वह सिंह-मानव 'नरसिंह' के चंगुल में फंस गया। इस पूरे घटनाक्रम के दौरान एक रहस्यमय मानवाकृति लगातार ध्रुव के पीछे लगी थी। अंततः नरसिंह ने ध्रुव को भी 'बाघ-मानव' बनाने की ठान ली ताकि फिर ध्रुव उसका आजीवन गुलाम बन जाए। अब आगे पढ़िए—

ध्रुव ने पूरी कोशिश की कि द्रव उसके गले से नीचे न उतरने पाए।
लेकिन अब सांस उसका साथ छोड़ रहा था। खतरनाक द्रव गले से नीचे उतरने ही वाला था।

ध्रुव के 'बाघ-मानव' बनने में चंद क्षणों का फ़ासला था कि तभी-
दो गोलियां चलीं। पहली गोली ने बीकर चकनाचूर कर दिया।...

...और दूसरी गोली का निशाना था कमरे में चमक रहा एकमात्र बल्ब!
छनाक

पूरा कमरा पलक झपकते ही अंधेरे में डूब गया।
अंधेरे का फ़ायदा उठाकर ध्रुव ने 'धोबी पाट' दांव मारा।

पकड़ना! भागने न पाए! आह!!
और एक 'भेड़िया-मानव' ध्रुव की पीठ पर से होता हुआ दूसरे 'भेड़िया मानव' से जा टकराया-
धड़ाम
और वे दोनों ही अपना संतुलन खोकर नरसिंह पर जा गिरे।

ध्रुव ने अपने मुंह में भरा द्रव तेजी से बाहर थूका और एक गहरी सांस ली।
पकड़ो!
साथ ही वह तेजी से बाहर भागा।

पर यह गोली चलाई किसने? यहां पर मेरा मित्र कौन आ गया!?...
... एक मिनट! नरसिंह ने मुझसे पूछा था कि मैंने भेड़िया-मानव पीटर को गोली क्यों मारी?
परंतु मैंने तो उसे गोली नहीं मारी!

यानि... यहां पर मैं अकेला नहीं, हम दो हैं!...
पर वह दूसरा है कौन?
लगता है कि अब ध्रुव को अपनी शक्ल दिखाने का वक्त आ गया!

वह मैं हूं!
लेकिन दूसरा नहीं...
अरे!

...दूसरी!
रेणु, तुम!!?
यस, कैप्टेन!

लेकिन तुम...
... छोड़ो! बाकी बातें मैं तुमसे बाद में पूछूंगा। अभी मैं इनको उलझाए रखता हूं! इस बीच तुम यहां से निकलकर एस॰पी॰ साहब को सूचित करो!
पर...
जल्दी!

पर मैं..
बहस मत करो! भागो !! कोई इधर ही आ रहा है!

आने वाला प्राणी मानो किसी दुःस्वप्न से निकलकर आया था।
अरे! वह लड़की...
ओफ़! इसने रेणु को भागते हुए देख लिया है!

'शूकर-मानव' का मुंह अपने साथियों को चेतावनी देने के लिए खुला।
लेकिन ध्रुव ने तबतक जमीन से मिट्टी का एक ढेला उठा लिया था।

निशाना सच्चा था।
'शूकर-मानव' की आवाज़ उसके गले में ही घुटकर रह गई।
हट्प
इसके खुले मुंह में गोली मारना ज्यादा आसान होता!...

...परंतु दुर्भाग्यवश मेरी पिस्तौल में साइलेंसर नहीं है! सभी 'पशु-मानव' गोली की आवाज़ सुनकर सीधे यहीं आते!
धमम
ध्रुव ने तेज़ी से अपना सिर नीचे किया

और अगले ही पल वह उछल कर पांच फुट पीछे आ गिरा।
आऽऽऽऽ!

ओफ़ ! लगता है जैसे मैंने सिर किसी दीवार पर दे मारा हो !
इससे पहले कि ध्रुव इस आत्मघाती वार से संभल पाता-

गुस्से में पागल शूकर-मानव चेतावनी देना भूलकर ध्रुव को मसल देने के लिए आगे बढ़ा।
ध्रुव ने पहला वार बचाया।
लेकिन दूसरा वार वह नहीं बचा पाया।
त ड़
ओफ़!
इससे बचने का तो कोई रास्ता समझ में ही नहीं आता ! ...

रास्ता ! रास्ता तो है... यह संकरा गलियारा!
?
ध्रुव तेजी से संकरे गलियारे में लपका।

और क्रुद्ध 'शूकर-मानव' भी बिना कुछ सोचे समझे तंग गलियारे में घुस गया।
पर वह ज़्यादा आगे नहीं बढ़ पाया –
यह ... यह क्या !? मैं तो गलियारे में फंस गया !!

मैं हाथ तक नहीं हिला पा रहा हूं!
ध्रुव का हाथ तेजी से आगे बढ़ा...

...और दो उंगलियां अपने निशाने पर जा घुसीं।
खचाक

AIIIIIISSSSS!!!
अब यह किसी को यह नहीं बता पाएगा कि मैं किधर गया!

यह चिल्लाहट कैसी है?
यह तो 'शूकर-मानव' जीलान की चीख है!
चलो!
देखें क्या हुआ?

'शूकर-मानव' तब तक तंग गलियारे से वापस निकल आने में कामयाब हो गया था।
क्या हुआ, जीलान?
स्वामी! मैं अंधा हो गया, स्वामी!! ... उसने मेरी दोनों आंखें फोड़ दीं!!...हाय!!

किसने?
ध्रुव ने!
ध्रुव, ध्रुव, ध्रुव!! मैं पागल हो जाऊंगा!...वह गया किधर?

मैं देख नहीं पाया!
ओह! तो इसीलिए उसने तुम्हारी आंखें फोड़ दीं और भाग गया!
लेकिन वह जाएगा कहां?
हमारा हर एक सेवक उसकी तलाश में है!
बकरे (सड़प) की मां आखिर कब तक खैर मनाएगी!
जगुआर, तुम मेरे साथ आओ!
जो आज्ञा, स्वामी!
ध्रुव ने छिपने की जगह ढूंढ़ तो ली थी, पर -
ठक
ठक
ठक
ठक
कुछ क़दमों की आहट इधर ही आ रही है!...
... और इस कमरे में आने या जाने का ...
सिर्फ एक दरवाजा है!!
लगता है कि अब मैं फंस गया!
लेकिन अब रेणु मदद लेकर आती ही होगी!
दूसरी तरफ रेणु ने सतर्कता से चलते हुए तीन-चौथाई रास्ता तय कर लिया था।
- कि तभी -
अरे, अरे!! स्वामी ने मुझको पहरे पर लगाकर अच्छा ही किया!...वर्ना यह लड़की हमारे किए-कराए पर पानी फेर देती!!
फड़ फड़ फड़ फड़
फड़ फड़ फड़ फड़
डैनों की फड़फड़ाहट सुनकर रेणु मुड़ी। लेकिन...

...तब तक देर हो चुकी थी।...

...और 'बाज-मानव' रेणु को लेकर वापस गढ़ की तरफ़ रवाना हो गया।
ध्रुव की उम्मीदों की आखिरी कड़ी भी टूट गई।

दूसरी तरफ़-लक्षद्वीप से दूर-भारत की धरती पर-इस बीच घटनाएं दूसरा ही मोड़ ले रही थीं।
पापा, मुझे तो चिंता हो रही है! दो दिन होने वाले हैं और ध्रुव भईया की अब तक कोई खबर नहीं आई!
श्वेता की चिंता बिल्कुल सही है! आप तो बाप नहीं, पत्थर हैं!...
...इतने दिन बाद बेटा मिला और उसको भी... (सुबक)
रो मत, निशा, उसे कुछ नहीं होगा, बल्कि मुझे तो उन पशु मानवों पर दया आ रही है...
...कि उनका सामना ध्रुव से है!

खैर! मैं अभी तुरंत 'स्पेशल परमीशन' का इंतजाम करके लक्ष द्वीप रवाना होता हूं!...
...मेरे रहते ध्रुव पर कोई आंच नहीं आ सकती!
सुबक!
पापा, मैं भी चलूंगी!
अरे, तू क्या करेगी वहां पर?

तू तो चुपचाप यहां बैठकर अपना वही शौक पूरा कर... इलेक्ट्रॉनिक्स की नई-नई चीजें बनाने वाला! समझी!?
नहीं, पापा! जब तक मैं ध्रुव भईया को ठीकठाक नहीं देख लेती, मुझसे कोई काम नहीं होगा!
अच्छा, ठीक है! तू जीती और मैं हारा!
जा, कपड़े पैक कर ले!

उधर - ध्रुव के लिए मुसीबतें अभी शुरू ही हुई थीं –
जगुआर, हमें ध्रुव को कम नहीं आंकना चाहिए! 'सर्प मानव' नूरा, 'गेंडा मानव' शसुका और 'शूकर-मानव' जीलान को हरा देने वाला लड़का मामूली नहीं हो सकता!
और 'भेड़िया मानव' शकूरा को भी, स्वामी!
?

हाँ! इसीलिए तुम 'सौर किरण कक्ष' पर पहरा और कड़ा कर दो! अगर उसको किसी तरह ये पता चल गया कि हमारी मुख्य मशीन उसी कमरे में है...

जो सूर्य की किरणों को एकत्रित करके इन कलाई वाले पट्टों को चालू रखती है, तो वह उसको नष्ट करने की कोशिश जरूर करेगा!

उस मशीन के नष्ट होने से हमारे पट्टों की शक्ति भी खत्म हो जाएगी! और उसके बाद क्या होगा, यह मुझे तुमको बताने की जरूरत नहीं है!
तो यह है इनका मुख्य भेद!
मैं समझ गया, स्वामी! मैं अभी...

तभी-
स्वामी, यह लड़की हमारे गढ़ की तरफ़ से भाग रही थी!
कौन है तू, लड़की?
हा हा! यह ऐसे कुछ नहीं बताएगी! यह ज़रूर ध्रुव की सहेली होगी! इसको सावधानी से बंद कर दो!
ध्रुव को बचाने के लिए गोली इसी ने चलाई होगी!
ओफ़! यह क्या हो गया?
यह जल्दी ही हमारे काम आएगी! हा हा हा हा हा!

ध्रुव असहाय सा देखता रह गया।
इस वक्त अगर मैंने रेणु को बचाने की कोशिश की तो हम दोनों में से कोई भी नहीं बच पाएगा!

और सुनो जगुआर, 'भेड़िया-मानव' पीटर को जिस तरह से आंख में गोली मारी गई, उससे मैं बहुत चिंतित हूं!...
...वैसे मैं तुम सब को बता चुका हूं कि गोलियां हमारे शरीर पर असर नहीं करेंगी...
...परंतु फिर भी तुम सभी गश्ती सेवकों को 'बुलेटप्रूफ़ शीशे' के चश्मे पहनने का आदेश दे दो!
बहुत अच्छा, स्वामी!

दोनों आकृतियां धीरे-धीरे कमरे से बाहर निकल गईं।
अब सबसे पहला काम है रेणु को आज़ाद कराना!...
...और उसके बाद वह मशीन नष्ट करना जो इस सारे झगड़े की जड़ है!

वहां से कुछ ही मील दूर-
आ..आइए, सर! लक्षद्वीप में आपका स्वागत है!
आपका टेलीग्राम हमको अभी-अभी मिला!
POLICE HE

एस.पी. शेरखान कहां हैं?
वे शहर के दौरे पर गए हैं! अभी आते ही होंगे! तब तक आप आराम कीजिए, सर!

मैं यहां आराम करने नहीं आया!
आप तुरंत वायरलैस से मिस्टर शेरखान को खबर करिए! मैं उन्हें पंद्रह मिनट के अंदर अपने सामने देखना चाहता हूं!
य...यस, सर!
शाबास, पापा!

और ठीक पंद्रह मिनट बाद, एस॰पी॰ शेरखान आई॰जी॰ राजन के सामने भीगी बिल्ली बना खड़ा था।
प...पर, सर, मैंने तो इसे मनगढ़ंत बात समझा था! ...
बहुत खूब!...

...यानि कोई पांच सौ मील दूर चलकर आपको मनगढ़ंत गप्पें सुनाने आएगा?
व..वो... आई एम सॉरी, सर!

आप तुरंत 'स्पेशल पुलिस फोर्स' का इंतजाम करिए! यह छानबीन मैं खुद करूंगा!

शीघ्र ही-
हां, सर! मि॰ ध्रुव यहीं पर रुके थे!
थे!? 'थे' का मतलब, मैनेजर?
टैक्सी स्टैन्ड
सर, वे कल शाम को अपनी मोटरसाईकल से कहीं चले गए!...
...कहां गए; यह नहीं पता!

लेकिन तभी-
मोटरसाईकल!! ... साहब, साहब, मैं जानता हूं, साहब! बताऊं तो कुछ इनाम मिलेगा?
मिलेगा! बताओ!!

कल शाम को इसी होटल से एक लड़का, पीले और नीले चुस्त कपड़े पहने, मोटर-साईकल पर निकला! ...
... और, साहब, तभी एक लड़की दौड़ती हुई आई!
उसने मुझसे मोटरसाईकल का पीछा करने को कहा!

ध्रुव का पीछा!?
फिर वे दोनों कहां तक गए?
जंगल के छोर तक, साहब! आइए, मैं आप को वहां तक ले चलता हूं!
चलो!

शीघ्र ही -
यह तो भइया की ही मोटरसाईकल है, पापा!
यानि ध्रुव कल शाम को जंगल में गया और अब तक नहीं लौटा!?
आओ, श्वेता! अब एक क्षण भी व्यर्थ करना ठीक नहीं है!

दूसरी तरफ़ - ध्रुव अभी तक पशु-मानवों के चक्रव्यूह में ही फंसा था।
ओफ़! अभी तो मुझे यह तक नहीं पता कि इन प्राणियों ने रेणु को बंदी बना कर कहां रखा है?

रेणु भी परेशान थी।
ध्रुव अब तक यही समझ रहा होगा कि मैं मदद लेकर आ रही हूं! उस को यह बताना बहुत ज़रूरी है कि मैं यहां पर बंदी हूं! पर कैसे?

हां! एक रास्ता है!! ये लोहे के पाइप, जिनके अंदर से बिजली के तार गए हैं, पूरी इमारत में फैले हैं! अगर मैं इनसे ...

... संदेश भेजूं तो ध्रुव इस इमारत में जहां कहीं भी होगा, मेरा संदेश सुन लेगा! ...
टन
टन
टनटन
टन टन
टनटन टन

संदेश पाइपों के जरिए पूरी इमारत में फैलने लगा।
ये टक्-टक् की आवाज़ कैसी है ?
टक्
टकटक टक्
टकटक
?
टक्
टकटक
PLAYBOM
अरे ! तू चुपचाप अपना काम क्यों नहीं करता ?
पाइप में कोई चूहा-वूहा घुस गया होगा !

परंतु ध्रुव इतना बेख़बर नहीं था।
यह क्या !? यह तो 'मोर्स कोड' से कोई संदेश भेज रहा है !...
टक् टक्
टक्
टक्
अरे! यह तो रेणु का संदेश है!

वह इस इमारत के पूर्वी छोर पर बने एक क़ैदख़ाने में बंद है !

और जल्दी ही-
यह रहा वह क़ैदख़ाना, जहां रेणु बंद है ! पर आश्चर्य है, इस पर कोई पहरा नहीं है !...
शायद ये रेणु की तरफ़ से कोई ख़तरा महसूस नहीं करते !
ध्रुव ने सतर्कता से चारों तरफ़ देखा और फिर वह तेजी से आगे बढ़ा।
ओह, ध्रुव !! इन लोगों ने मुझे रास्ते में ही पकड़ लिया !

मैं तो जंगल से बाहर ही नहीं जा पाई !
कोई बात नहीं ! अब सब से पहले तुम को...
ध्रुव ! तुम्हारे पीछे !...

एकाएक ध्रुव ने महसूस किया कि वह दुश्मन के बिछाए जाल में फंस गया है।
हाहाहा! स्वामी जानते थे कि तुम इस लड़की की तलाश में यहां ज़रूर आओगे! ...और तुम आ गए!
स्वामी का अंदाज़ कभी गलत नहीं होता!
बंद कर दो @*% को!

कैदखाने का दरवाज़ा खुला। एक धक्का लगा और ध्रुव अंदर जा गिरा।
कमीनो!
धड़ाम

अब तुम दोनों यहीं सड़-सड़ कर मरोगे! दुनिया अब यह सही वक़्त पर ही जान पाएगी कि हम कौन हैं! पर यह कभी नहीं जान पाएगी कि हम कहां हैं!

परंतु शहर में –
फ़ोर्स तैयार है, सर!
वैरी गुड! उनको तुरंत चलने का आदेश दो!
और श्वेता तुम...

अरे! श्वेता कहां चली गई?
जब आप नहा रहे थे, सर, तब श्वेता बेबी आईसक्रीम लेने चली गई!
अजीब लड़की है यह तो! ...

अभी अपने भइया के लिए इतनी परेशान थी, और अब आईसक्रीम खाने निकल गई! ख़ैर, अच्छा ही हुआ!...
... मैं खुद भी उसको उस ख़तरनाक स्थान पर ले जाना नहीं चाहता था!

और शीघ्र ही - अत्याधुनिक शस्त्रों से लैस 'स्पेशल पुलिस फ़ोर्स' जंगल की तरफ़ बढ़ चली।

जंगल में - आने वाली मुसीबत से बेख़बर 'पशु-मानव' एकदम निश्चिंत थे।
अगर वह लड़की भाग जाती तो हमारा अभियान शुरू होने से पहले ही ख़त्म हो जाता!

तुमने वाकई कमाल का काम किया है, 'बाज-मानव' श्मिट!
दोनों में से कोई नहीं जानता था कि दो आंखें उनको देख रही हैं।

वह इसलिए क्योंकि मैं हमेशा सतर्क रहता हूं! और अब मैं फिर गश्त पर जा रहा हूं!
क्यों अपनी एनर्जी वेस्ट करते हो?
अब यहां पर कौन आएगा?

फिर भी हमें सतर्क रहना चाहिए!
मैं अभी आता हूं!

और उस रहस्यमय साए को अपनी मंजिल तक पहुंचने में कोई दिक्कत नहीं हुई।-
ये मूर्ख पूरी तरह निश्चिंत हैं!...
...ये यह नहीं जानते कि इनकी मौत यहां आने के लिए चल चुकी है!

पर ये इतने भी निश्चिंत नहीं हैं कि इमारत के पहरे में ढील दे दें! अंदर जाने का सिर्फ़ यही रास्ता है!...

...इसीलिए इन आदमखोरों की पूरी जमात को इमारत के मुख्य द्वार से दूर हटाना पड़ेगा!

आ... आग!
आग लग गई!
अरे दौड़ो! इस पर पंप से पानी डालो!
जंगल की आग बहुत तेजी से फैलती है!

आग तो बढ़ रही है! हम सब तबाह हो जाएंगे!!
ओफ़! नरसिंह भी यहां नहीं है! पता नहीं वह दिन होते ही रोज कहां चला जाता है!
चुप! पानी डाल चुपचाप!!

अंदर-
क़ैदियों को छोड़ो! जल्दी आओ! बाहर आग लग गई है! आग बुझाने वाले कम पड़ रहे हैं!
क्या!? तुम यहीं रुको, निक्का! मैं जाकर इनकी मदद करता हूं!

यही मौका है रेणु! वर्ना हम कभी भी यहां से बाहर नहीं निकल पाएंगे!
पर कैसे? दरवाज़े पर ताला लगा है!...
...और हम दोनों की पिस्तौलें इन 'पशु-मानवों' ने ले ली हैं!

परन्तु तभी- एक अप्रत्याशित मदद ऊपर से कूदी।
अरे! यह कौन है?
कोई भी हो! पर दोस्त ही लगती है!
और पहरेदार उछल कर सलाखों पर आ गिरा।

ध्रुव आगे लपका -
रेणु, तुम इसका दूसरा हाथ पकड़ो!
मैं इसका पट्टा खोलता हूं!

लेकिन 'भेड़िया-मानव' में अद्भुत ताक़त थी।
धड़ाक

आह!
सुनो! तुम जो भी हो! इसके हाथ का पट्टा खोल दो!
हा हा! इसका मौका मैं दूंगा तब न!

ओफ़! इनमें तो वाकई अद्भुत ताक़त है! लेकिन मैं भी इनके लिए तैयार हूं!
उस मददगार का हाथ अपनी बेल्ट पर गया।

और अगले ही पल – 'भेड़िया मानव' अपना सर पकड़कर जोरों से चीखा।
आ ऽऽऽऽऽ

अब मैं इससे चाबी ले लूं, तो यह मना भी नहीं कर पाएगा!
आश्चर्यजनक! यह तुम ने क्या किया? और तुम हो कौन?

मुझे चांडिका कहते हैं! मैं समाज के दुश्मनों की कट्टर दुश्मन हूं!...

...और दोस्तों की पक्की दोस्त!

ध्रुव ने शीघ्रता से 'भेड़िया-मानव' के हाथ से पट्टा उतारा।
अरे! यह तो मनुष्य के रूप में आ रहा है!...

हां! इनका असली रूप...यही है!
ध्रुव का एक करारा कराटे चॉप 'भेड़िया मानव' की गर्दन पर पड़ा।

अब यह हमें परेशान नहीं करेगा! आओ! अब पहला काम वह 'मशीन कक्ष' नष्ट करना है जो इनके पट्टों को उर्जा सप्लाई करके इनको 'पशु मानव' बनाए रखता है!
मशीन कक्ष!?

हां! नरसिंह ने मुझको अंजाने में ही यह रहस्य बता दिया!...पर, चंडिका, तुमने उस 'भेड़िया मानव' के साथ क्या किया था?
पराध्वनि तरंगें!...यानि अल्ट्रासोनिक वेवस! मेरी बेल्ट में लगे इस यंत्र से...

...आवाज की आवृत्ति बहुत अधिक हो जाने पर ये तरंगें पैदा होती हैं। हम मनुष्य इसको नहीं सुन पाते, लेकिन पशु सुन लेते हैं! पशु रूप में वह 'भेड़िया मानव' यही भीषण शोर सुनकर सिर पकड़कर बैठ गया था!
अगर वह और थोड़ी देर तक यह शोर सुनता रहता...
...तो उसका मस्तिष्क नष्ट भी हो सकता था!
वाह!
एक खबर और है, ध्रुव!
तुम्हारे पिता पुलिस फोर्स लेकर इधर ही आ रहे हैं! अब इन प्राणियों का अंत निश्चित है!
मेरे पिता! यहां!!?

यह आखिर है कौन और मेरे बारे में इतना कैसे जानती है? खैर, अभी यह सोचने का वक़्त नहीं है!
चंडिका, इस सूचना से अब हमें पूर्व योजना बदलनी पड़ेगी!

तुम रेणु को लेकर तुरंत मेरे पिताजी के पास पहुंचो और उनको यहां की स्थिति से अवगत कराओ!
पर तुम यहां अकेले...

बहस मत करो! हो सकता है उनको 'पशु मानवों' की शक्ति का सही अंदाज न हो! रेणु का इस वक़्त अकेले जाना ठीक नहीं है!
ठीक है, बेस्ट ऑफ़ लक, ध्रुव!

बाहर का मोर्चा तो 'पुलिस फोर्स' संभाल लेगी!...
लेकिन अंदर का पूरा मोर्चा मुझको अकेले ही संभालना है!

बाहर-
आओ, रेणु!
वे अभी तक आग बुझाने में व्यस्त हैं!...
...जो मेरी लगाई हुई है!

पर तभी-
वह देखो! वो लड़की फिर भाग रही है! साथ में कोई और भी है!

जस्वीरा, आओ मेरे साथ! इस बार इसका फैसला कर ही दिया जाए!

पशु मानवों से बचकर भाग पाना असंभव था। पहला वार चंडिका पर हुआ।
आह! मेरी अल्ट्रासोनिक बेल्ट!
तड़

शारीरिक शक्ति में दोनों लड़कियां, पशु मानवों के सामने...

...मच्छर के समान थीं।

ध्यान रखना, जस्वीरा! इसबार ये भागने न पाएं!
तुम उधर से पकड़ो! मैं इधर से पकड़ता हूं!
दोनों 'भेड़िया-मानव' दो तरफ से बढ़े।

अगले ही पल दोनों लड़कियों के बदन हवा में उछले और -
हमारे वारों का इन पर असर नहीं होता है, लेकिन...
धमममम
...एक दूसरे के वारों का तो असर जरूर होगा!

आओ, रेणु! जल्दी!

उधर-
चीप..चीप! सेक्को! पुलिस आ रही है!
क्या?

कमांडर, बाहर पुलिस आ रही है, और वह...
वह क्या?
ध्रुव और वह लड़की भाग निकले!

क्या!? तुम तुरंत जा कर 'मशीन-कक्ष' पर पहरा और कड़ा कर दो! ...
...और सभी सेक्कों को आदेश दो कि वे पुलिस से मोर्चा लें!...

...उनका एक भी सिपाही
जिंदा वापस नहीं जाना चाहिए!

लगता है बाहर पुलिस
आ गई है!

ध्रुव का ख्याल एकदम सही था।
पुलिस बाहर आ चुकी थी।
यही है हमारी मंजिल, जवानो!
पोज़ीशन ले लो!

तभी-
अरे! रेणु
तुम! और ये
कौन है?
ये बताने का वक़्त
नहीं है, सर! ध्रुव अभी
तक अंदर ही है!
और इन प्राणियों के पास
अत्याधुनिक शस्त्रों का भारी स्टॉक है!

ये जब तक इसी रूप में
रहेंगे, इनको हरा पाना
बहुत मुश्किल है!
इसी रूप में...!?
यानि!...
हां, सर! ये
प्राणी वास्तव में
मनुष्य ही हैं!...
...और अपनी कलाई पर बंधे
पट्टों की वजह से जानवरनुमा
बने हुए हैं!

ओ माई गॉड!
बचिए पा,...मेरा मतलब, आई•जी• साहब!
धाँय
धाँय
लेकिन तभी - इमारत की ओर से तेज़ फायरिंग शुरू हो गई।

पुलिस के जवानों ने भी जवाबी फ़ायरिंग शुरू कर दी।
सर, घने पेड़ों के कारण हमारी सारी गोलियां व्यर्थ जा रही हैं!

गोली चलाना बेकार है! हमला करो!

अरे! यह सब तो हमारी तरफ़ ही भागते आ रहे हैं!
मशीन-गन चलाओ!

परंतु मशीनगन की गोलियां भी 'पशु-मानवों' पर अप्रभावी रहीं।

और पुलिस खेमे में तहलका मच गया।
तड़ाक

ऐसे एक जानवर को मैंने आंख में गोली मारकर खत्म किया था!
पर इस वक्त इन्होंने बुलेट प्रूफ शीशे के चश्मे पहन रखे हैं!

'पशु मानवों' का हमला ज़बरदस्त था।
?

परंतु तभी- एस॰पी॰ शेरखान चीख कर पलटे।
आIIIISSS..
क्या हुआ, शेरखान?
गोली, सर! आह! मुझे गोली लगी है, सर!

राम सिंह, तुम एस॰पी॰ साहब को लेकर तुरंत अस्पताल...
नहीं, सर!
इस मोर्चे से अपना एक भी सिपाही कम नहीं होना चाहिए!

अपनी देखभाल मैं खुद कर लूंगा!
मैं पट्टी बांधकर अभी आता हूं, सर!
यहां की फिक्र मत करना! तुम अपनी तबियत देखकर ही आना!
इधर पुलिस के जवान एक-एक कर कम हो रहे थे-

और दूसरी तरफ़ 'पशु-मानवों' का पलड़ा भारी हो रहा था।
नरसिंह आ गए!
वाह!

नरसिंह की उपस्थिति से पशु मानवों का जोश दुगना-तिगुना हो गया।
सेवको, गोलियां हमपर बेअसर हैं! आगे बढ़ो...

...और इनको गाजर-मूली की तरह काट डालो!
इनके एक भी सिपाही की जिंदगी हम सब की मौत है!

चंडिका, यह क्या हुआ?
मैं ध्रुव की मदद के लिए अंदर जाना चाहती थी!
पर अब वह संभव नहीं दिखता!

पशु-मानवों ने चारों तरफ़ हाहाकार मचा दिया।
तड़
धाड़

लेकिन फिर भी पुलिस के जवान साहस का दामन नहीं छोड़ रहे थे।
तड़ाक

आई॰जी॰ राजन भी किसी से पीछे नहीं थे।
मुझमें अब भी इतनी शक्ति है ...
तड़ाक
... कि तुम जैसे नाली के कीड़ों से बखूबी निपट सकूं!

नाली के कीड़ों से तो निपट सकते हो, आई॰जी॰ साहब...
चर्र्र

...लेकिन जंगल के शहंशाह की एक दहाड़ से ही तुम्हारा दिल धड़कना बंद कर देगा!

रेणु, आई॰जी॰ साहब की मदद करें! आओ!!
फ़िक्र मत करो, धंडिका! मेरे रहते कोई उनका बाल भी बांका नहीं कर सकता!

दोनों लड़कियां नरसिंह पर बाज के समान झपटीं -
?
धड़ाक

परंतु नरसिंह की अद्‌भुत शक्ति के सामने वे विवश थीं।
गर्रर्रर्रर्रर्र

आई॰ जी॰ राजन, पुलिस वाले की जब मौत आती है, तो वह जंगल की तरफ भागता है!

आई॰ जी॰ राजन बेबस हो गए। दम साथ छोड़ने लगा।
मौत सामने खड़ी दिखने लगी।

अंदर- ध्रुव इस भयानक युद्ध से बेखबर था। -
यही है इनका मशीन-कक्ष!
मशीन कक्ष

...लेकिन इस पर तो बहुत सख़्त पहरा है!
ध्रुव बाहर कहीं नहीं दिख रहा! वह ज़रूर इसी इमारत के अंदर छुपा होगा।...

...अगर वह यहां तक आ गया, और उसने यह बटन नष्ट कर दिया, तो समझो हम नष्ट हो गए!
ऐसा कभी नहीं हो सकता! हम ऐसा कभी नहीं होने देंगे!

तो मुझको रोकने की भरपूर कोशिश कर लो, कमीनो!

!?
अब मुझको रोक पाना असंभव है!
इस बटन को नष्ट करने से मुझको अब साक्षात शैतान भी नहीं रोक सकता!
तड़ाक

ध्रुव का निश्चय दृढ़ अवश्य था-
धाड़

परंतु 'पशु-मानवों' की संख्या बहुत अधिक थी।
पकड़ लिया!
छूटने न पाए!

इसको बटन तक मत पहुंचने देना, वर्ना..

मुकाबला किसी भी नज़र से बराबर का नहीं था।
लेकिन ध्रुव की रगों में उबलते खून ने...

...'पशु मानवों' की शक्ति को तहस-नहस कर दिया।

उत्तेजना अपनी चरम सीमा पर थी –
आह!

और ध्रुव ने अपना काम अंजाम दे दिया।

आह!
ओह!
पशु-मानवों की खूंखार शक्लें बदलने लगीं।

बाहर सिपाहियों से ज़्यादा आश्चर्यचकित स्वयं 'पशु-मानव' थे।
य...यह क्या?

हुर्रे!
ध्रुव ने आख़िरकार अपना काम कर ही दिया!
नरसिंह भी आश्चर्यचकित था।
?
उसमें अपने शरीर में हो रहे बदलाव को रोकने की ताक़त नहीं थी।

और अगले ही पल- आई॰ जी॰ राजन के सामने खड़ा था -
एस॰पी॰ शेरख़ान ...यानि नरसिंह!

लोहार के एक ही वार से पूरे युद्ध का नक्शा ही बदल गया। पशु-मानवों ने बिना प्रतिरोध करे हार मान ली।
अरे! यह सब तो जेल से भागे हुए क़ैदी हैं, सर!

भागे हुए नहीं, भगाए हुए! एस॰पी॰ शेरख़ान द्वारा!
ध्रुव! तुम ठीक तो हो न!?
हां, पापा! फर्स्ट क्लास! पर एक बात और है!...
...इतनी देर से पुलिस जो गोलियां चला रही थी, वे सब की सब नक़ली थीं!

पर कमाल तो तुमने किया है, ध्रुव!
मैंने नहीं, पापा! यह कमाल तो रेणु और चंडिका...
अरे! चंडिका कहां गई?

पता नहीं! अभी तो यहीं थी! ...
आश्चर्य है! वह पता नहीं कहां से आई और कहां चली गई?

ख़ैर! लेकिन तुमने मुझको यह नहीं बताया कि तुम यहां तक कैसे आई, रेणु?
सीधी सी बात है! ...
संयोग से एक महीने की छुट्टियां बिताने के लिए मैंने लक्षद्वीप को ही चुना!

यहां मैंने तुमको देखा और फिर तुम्हारा पीछा करते-करते यहां तक पहुंच गई!
तुमने मेरा सिर गर्व से ऊंचा कर दिया! ...
...आज मुझको पहली बार अपनी कमांडो फ़ोर्स पर इतना नाज़ हुआ है!

शेरख़ान ने बिना किसी दबाव के सब उगलना शुरू कर दिया —
बात आज से दो साल पहले की है! मेरी यहां नई पोस्टिंग थी! एक दिन एक ख़तरनाक अपराधी का पीछा करते-करते मैं यहां आ पहुंचा...

...यहां पर मुझको एक जर्मन वैज्ञानिक की लिखी डायरी मिली। मुझको जर्मन भाषा आती है। डायरी में एक ऐसे आश्चर्यजनक आविष्कार के बारे में लिखा था जिससे मानव को 'पशु-मानव' में बदला जा सकता था।

यह पढ़ते ही मेरे दिमाग़ में एक नई स्कीम जन्म लेने लगी। मैंने अपने पद का फ़ायदा उठाते हुए जेलों में मैं बंद अंतर्राष्ट्रीय कैदियों को जेल से भगाना शुरू कर दिया।

वे भागकर कहीं नहीं जा सकते थे। अब वे सब मेरे गुलाम थे। हांलाकि उनमें से यह कोई नहीं जानता था कि उनका स्वामी वास्तव में शेरख़ान है। मैंने हथियार इकट्ठे करने शुरू कर दिए। मेरा सपना था कि मैं पशु-मानवों की शक्ति से पूरी दुनिया का राजा बनूं।

लेकिन जानू ख़ां ने गड़बड़ कर दी। न वह शहर जाता और न ही उसकी ध्रुव से मुठभेड़ होती। ...

...और न ही ध्रुव यहां आता! पर मुझको अभी तक यह यक़ीन नहीं होता कि इस बच्चे ने ही पशु मानवों के शक्तिशाली साम्राज्य को ख़त्म किया है!
हां! क्योंकि यह बच्चा नहीं है, शेरख़ान! इसका नाम है...
...सुपर कमांडो ध्रुव! ...

और फिर - वापस घर में-
ओह ध्रुव, ध्रुव! तुमने तो मेरा चिंता के मारे बुरा हाल कर दिया था!

तुमको मेरी चिंता जरूर थी, मम्मी!
पर इस बंदरिया को नहीं!

हुंह!
उधर मैं मौत से जूझ रहा था...

...और यह चटोरी आईसक्रीम खा रही थी!

क्या आप भी यही समझते हैं?
समाप्त